स्टान्डेर्ड चार केरला हिन्दी सीरीज़ नं: ७.

॥ महान पुरुष ॥

(भाग दो)

4766

88

By

P. G. VASUDEV

★

VIDYARTHI MITHRAM BOOK DEPOT

EDUCATIONAL PUBLISHERS,

BAKER ROAD, KOTTAYAM.

स्टान्डेर्ड चार केरला हिन्दी सीरीज़ नं: ७.

॥ महान पुरुष ॥

(भाग दो)

H 7 66

लेखक:
पी. जी. वासुदेव

प्रकाशक:
विद्यार्थी मित्रम पब्लिकेशनस,
कोट्टयम ।

(सर्वाधिकार लेखक के अधीन)

पहला संस्करण
प्रतियाँ एक हज़ार
जनुवरी १९६०

[Naye Paise 50 only]

मुद्रकः
विद्यार्थी मित्रम प्रेस,
कोट्टयम ।

4766

इस में

१) कष्ट सहन का आरंभ
२) लड़ाई का आरंभ
३) लड़ाई के मैदान में

हमारे हिन्दी के अन्य प्रकाशन

१) बाल कहानियाँ (भाग १)
२) ,, ,, (भाग २)
३) ,, ,, (भाग ३)
४) आदर्श बालक (भाग १)
५) ,, ,, (भाग २)
६) ,, ,, (भाग ३)
७) आदर्श युवक (भाग १)
८) ,, ,, (भाग २)
९) ,, ,, (भाग ३)
१०) आदर्श पुरुष (भाग १) गान्धी जी
११) ,, ,, (भाग २) पटेल
१२) ,, ,, (भाग ३) नेहरु
१३) हिन्दी पण्डित

॥ कष्ट सनह का आरंभ ॥

तुम यह बात जानते ही हो कि हमारे राष्ट्रपिता गान्धी जी हैं। उन का असल नाम मोहनदास कर्मचन्द गान्धी है। हम उन को राष्ट्रपिता, गान्धी जी, बापू या महात्माजी कहते हैं। इन नामों में उन को बापू कह कर पुकारना ही हम अधिक पसंद करते हैं। सचमुच गान्धी जी हम सब के बापू थे। बापू पर भारतीयों को गर्व है। सिर्फ़ भारतीयों को ही नहीं, शांति चाहनेवाले सब लोग बापू पर अभिमान करते हैं। भारत में ही नहीं, सारे संसार में उन का आदर किया जाता है।

सन् १८६९ अक्टोबर तारीख दो का दिन सारे संसार के इतिहास में विशेष कर भारत के इतिहास में सोने के अक्षरों में अंकित किया गया है। उस दिन कठियावाड़ के पोरबन्दर राज्य के सुदामापुरी नामक गाँव में बापू जी ने जन्म लिया। आप के पिता कर्मचन्द गान्धी राजकोट रियासत के दीवान थे। गान्धी जी की माता पुत्तली बाई चारित्रवती और दृढ़चित्ता थीं।

बापू जी स्कूल में पढ़ रहे थे। उन की उमर तेरह साल की थी। तभी उन्होंने कस्तूर बाई से विवाह कर लिया। सन् १८८७ में मैट्रिकुलेशन परीक्षा में वे पास हुए। दूसरे वर्ष वे इम्लेंड गए। उन का इरादा था कि इम्लेंड में जा कर बैरिस्टरी परीक्षा के लिए अध्ययन करें। माता पुतली बाई ने पहले इस पर आपत्ति की। उनका विचार था कि इम्लेंड जानेवाले सब मांस खाते हैं, मद्य पीते हैं, और मेमों के जाल में फँस जाते हैं। बापू जी ने माता जी के सामने प्रतिज्ञा की कि इंग्लेंड में रहते समय मांस कभी न खाएँगे, मद्य न पीयेंगे, और न मेमों के जाल में फँसेंगे। तभी माता जी ने पुत्र को जाने दिया। जब तक गान्धी जी इंग्लेंड में रहते रहे तब तक माता जी के सामने की गयी प्रतिज्ञा का उन्होंने उल्लंघन नहीं किया।

इंग्लेंड में गान्धी जी का जीवन सादा और सरल था। उन के रहन सहन ने गोरों को अपनी ओर आकर्षित किया। पढ़ने में भी वे खूब ध्यान देते थे। साल भर के बाद बैरिस्टरी की डिग्री लेकर वे हिन्दुस्तान लौट आए।

हिन्दुस्तान में सब से पहले बापू जी ने बंबाई में अपनी प्राक्टीस आरंभ की। बाद में वे राजकोट चले आए। दोनों जगहों में वे असफल रहे। इन दिनों में किसी भारतीय कंपनी के एजेंट या वकील बन कर वे दक्षिण आफ्रिका चले गए।

गान्धी जी दक्षिण आफ्रिका में नेटाल के बन्दर पर उतरे। उन का स्वागत करने और उन को लिवा जाने के लिए अब्दुल्ला सेठ खुद बन्दर पर आए हुए थे। उन्हीं सेठ के निमंत्रण पर गान्धी जी आफ्रीका गए थे। उन को वे अपने घर लिवा ले गए। सेठ जी जाति के मुसलमान थे और इसलाम का बड़ा अभिमान रखते थे। फिर भी किसी अन्यमतावलंबी से विद्वेष नहीं करते थे। वे देश के बडे भक्त थे।

दो तीन दिन बाद की बात है। सेठ जी बापू को डरबन की अदालत दिखाने ले गए। बहुत से लोगों से वहाँ उन का परिचय कराया गया। अदालत में गान्धी जी को सेठ अपने वकील के पास बिठा दिया।

वे अपने सिर पर पगडी रखे हुए थे। मैजिस्ट्रेट अंग्रेज़ थे। वे गान्धी जी की ओर थोडी देर देखते रहे। उन के चेहरे का रंग बदल गया। वे बोल उठे, "अपनी पगडी उतार लो।"

लेकिन बापू कहाँ मानते? वे उठे और अदालत के बाहर चले आए। उन्होंने कभी अपने जीवन भर में किसी की अन्यायपूर्ण बातें नहीं मानीं। वे स्वतंत्रता के पुजारी थे। दक्षिण आफ्रिका में भारतीयों के लिए पगडी पहन कर चलना मना था। पगडी की यह समस्या बहुत दिनों तक बनी रही। लेकिन गान्धी जी ने अंतिम घडी तक अपनी पगडी नहीं छोडी।

दक्षिण आफ्रिका में मज़दूरी करनेवाले भारतीय मज़दूरों को गोरे लोग 'सामी' कह कर पुकारते थे। एक दिन किसी अंग्रेज़ ने गान्धी जी को सामी कह कर पुकारा। वे कहीं जा रहे थे। रुके और पीछे घूम कर मुस्कुराते हुए उस अंग्रेज़ को जवाब दिया, "तुम मुझे सामी कहते हो? हमारी भारतीय भाषा में सामी का मतलब पति से है। क्या, मैं तुम्हारा पति हूँ?"

गान्धी जी का जवाब सुन कर वह अंग्रेज़ शर्मिन्दा हो गया। उस ने फिर कभी किसी भारतीय को सामी कह कर नहीं पुकारा। यही नहीं जिस किसी अंग्रेज़ ने यह बात सुनी, भारतीयों को सामी कहना छोड़ दिया।

अब गान्धी जी के लिए नयी उपाधी आगयी। अंग्रेज़ उन को "कुली बैरिस्टर" कहने लगे। उन्होंने इस पर किसी से बातें नहीं कीं। मगर वे अख़बारों में इस के विरुद्ध लिखने लगे। पगडी और "कुली बैरिस्टर" पर आप ने खूब लिखा। इस बात में वे किसी की परवाह नहीं करते थे।

गान्धी जी दक्षिण आफ्रीका गए अब्दुल्ला सेठ के मैनेजर बन कर या वकील बन कर। कुछ दिनों के बाद उन को मुकदमा चलाने के लिए प्रिटोरिया जाना चाहिए था। दूसरे दिन गान्धी जी डरबन से प्रिटोरिया के लिए रवाना हुए। उन के लिए पहले दरजे का टिकट लिया गया था। सोने के लिए अलग टिकट लेना बापू जी ने उचित नहीं समझा। क्योंकि उन का विचार था कि इस के लिए पांच शिल्लिंग खर्च करना व्यर्थ है।

गान्धी जी की गाडी सन्ध्या के नौ बजे तक मोरित्सबर्ग पहुँची। यहाँ वे गाडी से नीचे प्लाटफारम पर नहीं उतरे। डब्बे ही के अन्दर बैठ कर किसी से बातें कर रहे थे। इस बीच में एक अंग्रेज़ अफ़सर वहाँ आया। वह भी उसी गाडी से जाना चाहता था। अंग्रेज़ ने आश्चर्य के साथ देखा कि एक काला आदमी—गान्धी जी—पहले

दरजे में बैठा है। झट वह बाहर गया और दो एक रेलवे नौकरों के साथ ले कर वापस आ गया। पीछे स्टेशन मास्टर भी पहुँचा। अंग्रेज़ यात्री ने उन लोगों के सामने गान्धी जी से कहा, "चलो, तुम यहाँ नहीं बैठ सकते। दूसरे डिब्बे में जाओ।"

लेकिन गांधी जी ने साफ़ इनकार कर दिया। और कहा, "मेरे पास पहले दर्जे का टिकट है।"

स्टेशन मास्टर ने कहा, "टिकट से कुछ होता जाता नहीं है। मैं तुम से कहे देता हूँ कि तुम को आखिरी डिब्बे में जा कर बैठना होगा।"

शांति के साथ गान्धी जी ने उन को जवाब दिया, "साहब, मैं तो डरबन से पहले दर्जे में बिठाया गया था और अब मैं इसी दर्जे में यात्रा करना चाहता हूँ।"

अफ़सर गरज उठा, "यह हो नहीं सकता। तुम को इस डिब्बे से नीचे उतरना ही होगा। नहीं तो सिपाही तुम को उतार देंगे।"

गांधी जी ने कहा, "सिपाही आएँ, उतारें। मगर मैं आप नहीं उतरने का।"

फिर क्या था? बात की बात में दो तीन सिपाही उस डिब्बे में आ धमके। उन दुष्टों ने गांधी जी का हाथ पकड़ा और धक्का दे कर उन को नीचे गिरा दिया।

उन के सामान वामान सब नीचे प्लाटफारम पर पटक दिये गए । लेकिन गांधी जी ने दूसरे डिब्बे में जाने से साफ़ इनकार कर दिया । घण्टी बजी । गाडी ने सीट दी और आगे बढी । जाडे के दिन थे । कड़ा जाड़ा पड़ रहा था । और अंधियारी भरी रात । अकेले गांधी जी और अपरिचित स्थान । वेटिंग रूम पास ही था । वे वहाँ जा कर एक लोहे की बेंच पर बैठ गए । गांधी जी कांप रहे थे । ठिठुर रहे थे । दांत उन के कट कट कर रहे थे । और सामान वामान वहीं बाहर प्लाटफारम पर बिखरे पडे थे । केवल एक हैंड बैग हाथ में था ।

और गांधी जी चिन्ता में डूब रहे थे। सोच रहे थे क्या किया जाए। वर्णभेद ही इस विद्वेष का कारण था । इस वर्णभेद और विद्वेष का गला घोंटने ही का गान्धी जी ने अपने मन में पूरा इरादा कर लिया ।

दूसरे दिन सबेरे गान्धी जी ने इस घटना की खबर अब्दुल्ला सेठ को दे दी । सेठ जी ने वहाँ से रेलवे के जनरल मैनेजर से शिकायत की और रात की गाडी से गान्धी जी के जाने का प्रबंधर कर दिया ।

गाडी सबेरे चारलस टाऊन पहुँची । वहाँ से घोडे गाडी से जोहानसबर्ग जाना था । गान्धी जी ने इस गाडी से यात्रा करने का टिकट पहले ही लिया था । लेकिन

वे काले थे। इसलिए घोडे गाडी के अन्दर उन को जगह नहीं दी गयी। गाडी में बाहर की तरफ़ गाडीवान की बगल में उन को बिठाया गया। यह गान्धी जी के प्रति घोर अन्याय था। फिर भी घोडे गाडी के मैनेजर से झगड़ा करना उन्होंने उचित नहीं समझा। वे गाडी-वाले की बगल में बैठ गए।

घोडे हवा से बातें करने लगे। तीन चार घण्टे की यात्रा के बाद गाडी एक उड्डे पर रुकी। एक नया यात्री आ गया। गाडी के अन्दर काफ़ी जगह नहीं थी। मैनेजर जो अब तक अन्दर दूसरे यात्रियों के साथ बैठा था, बाहर गान्धी जी के पास आया। उस ने उन से कहा, "मिस्टर कुली बैरिस्टर, तुम अब यहाँ से उठो और ज़रा नीचे पैर रखने के तख़्ते पर जा कर बैठो। जहाँ तुम अब तक बैठे रहे वहाँ मुझे बैठना पड़ रहा है।"

गान्धी जी ने दृढ शब्दों में कहा, "तुम ने तो पहले मुझे गाडीवान के बगल में बिठाया। उस अपमान को मैं किसी तरह पी गया। अब तुम मुझे पैर रखने के तख़्ते पर बिठाना चाहते हो। यह घोर अन्याय है, अनीति है, अन रीति है। मैं इस के लिए तैयार नहीं हूँ। मैं तख़्ते पर कभी न बैठूँगा।"

बापू जी अपना वाक्य पूरा भी कर नहीं पाये कि उन पर थप्पडों की वर्षा होने लगी। गाली गलौज ऐसी कि दूसरा कोई होता कि ज़मीन में गड़ जाता। लेकिन गान्धी जी ने हिम्मत नहीं हारी। वे जहाँ के तहाँ बैठे रहे। घोडे गाडी के मैनेजर ने उन को खींच कर ज़मीन पर पटकना चाहा। लेकिन गान्धी जी ने पीतल के उन सीखँचों को पकड़ लिया। जो बैठक के पास लगे थे। उन के हाथ छुड़ाने के लिये लाखों यत्न मैनेजर ने किये, मगर किसी तरह हाथ छूटे नहीं। मैनेजर निरंतर उन को मारता रहा। उन को गालियाँ देता रहा। मगर वे चुप थे। अपने निश्चय में वे दृढ चित्त थे।

यात्री लोगों को यह सारी बातें देख सुन कर गान्धी जी पर दया आयी। उन में से किसी ने मैनेजर को इस अधर्म से रोकना चाहा। उस ने उस को खूब समझा बुझा कर शांत करने का यत्न किया। आखिर उस ने बापू जी को पीटना तो छोड़ दिया, लेकिन गालियाँ अब भी चल रही थीं। उन के हाथ छोड़ दिए गए और उन को वहीं बैठने दिया। गान्धी जी और अन्य यात्रियों को ले कर घोडे गाडी आगे बढी।

बापू जी पर ऐसी कितनी ही घटनाएँ घटीं। दक्षिण आफ्रीका में एक बार उन को कुछ अंग्रेज़ गुण्टों ने घेर

लिया । उन पर लाठियाँ चलीं, अण्डे फेंके गए और स्याही पोती गयी । दूसरी बार आप को पुलीस ने पकड़ कर जेल भेज दिया । भारत में भी उन पर खूब अत्याचार हुए । लेकिन कभी भी वे अन्याय का बदला अन्याय से चुकाना नहीं चाहते थे । वे सत्याग्रही और अहिंसा के बडे भक्त थे । इसी सत्याग्रह और अहिंसा के आधार पर बापू जी ने हम को संगठित किया और भारत को स्वतंत्र किया ।

बापू जी हमारे राष्ट्रपिता है, हम धन्य हैं ।



॥ लडाई का आरंभ ॥

चाचा नेहरू को कौन नहीं जानता ? श्री जवाहर लाल नेहरू का नाम सारे संसार में प्रसिद्ध हो गया है । ये हमारे प्रधान मंत्री हैं, प्रिय नेता हैं, बच्चों के चाचा हैं । ये भारत के ही नहीं, सारे संसार के नेताओं में प्रमुख हैं ।

श्री जवाहर स्वर्गीय मोतीलाल नेहरू जी के सुपुत्र हैं । इन का जन्म सन् १८८९ नवंबर तारीख़ १४ को इलाहाबाद में हुआ । इन के माता पिता धनी मानी और ये उन के इकलौते बेटे थे । नेहरू परिवार बड़ा विशाल था और उस में श्री जवाहर को छोड़ कर इन के कई चचेरे

भाई और अन्य कुछ रिश्तेदार रहते थे । ये सब पढे लिखे थे । वे सदा अंग्रेज़ों के विरुद्ध बातें किया करते थे । वे कहते थे कि भारतीयों को चाहिए कि उन का मुकाबिला करें । उन के अत्याचारों को हम कभी सहन न करें । इन दिनों में भारत में अंग्रेज़ बडे घमण्ड और क्रूरता के काम करते थे । कभी कभी भारतीयों को मार डालने में भी वे संकोच नहीं करते थे । यह सब होने पर भी न्यायालयों में उन्हें कोई दण्ड नहीं दिया जाता था । गाडियों में अंग्रेज़ों के लिए अलग डिब्बे रिज़र्व होते थे । जो डिब्बे रिज़र्व नहीं होते उन पर भी वे कभी कभी अधिकार कर लेते थे । ऐसे डिब्बों में कोई भी भारतीय घुस नहीं पाता था । पार्कों में या सभा सम्मेलनों में भी बेंचें या कुर्सियाँ गोरों के लिए अलग रिज़र्व की जाती थीं । नेहरू परिवार में ऐसी बातें पर चर्चा हुआ करती थी और यह चर्चा सुन कर बालक जवाहर के दिल में बडी वेदना होने लगती थी । बल्कि यह सुन कर कि किसी भारतीय ने किसी अंग्रेज़ पर वार किया वे बडे खुश हो जाते थे । श्री जवाहर के चचेरे भाइयों में कोई किसी ऐसे झगडे में फ़स जाता और उस का समाचार पाने पर ये जोश से भर जाते । ऐसे झगडे अक्सर रेल की यात्रा में हुआ करते थे ।

श्री जवाहर जब कि दस वर्ष के हुए इन का परिवार आनन्दभवन में आ गया । नये घर के उद्यान में तैरने का एक बड़ा हौज़ था । जवाहर जल्दी ही तैरना सीख गए । शाम के समय पिता जी के बहुत से दोस्त तैरने आ जाते कभी कभी ये भी उन के साथ तैरते थे ।

उन दिनों में बोअर युद्ध चल रहा था । इस युद्ध के समाचार बालक जवाहर अखबारों में पढ़ते थे । निरपराध बोअर जाति पर अंग्रेज़ों का आक्रमण हो रहा था । जवाहर बोअरों के पक्ष में थे । ये उन की विजय मनाते थे ।

कुछ ही दिनों के बाद जवाहर के पिता मोतीलाल जी इंग्लेंड जा रहे थे । यह यात्रा उन की जाति के ब्राह्मण लोग धर्म विरुद्ध मान बैठे । जब वे लौट आये तो बड़ा तहलका मच गया । लेकिन ऐसी बातों को वे कब मानते ? पिता की ऐसी बेपरवाही का असर जवाहर पर खूब पड़ा है । जिस किसी बात को ये न्यायसंगत मानते हैं, उस से संसार की कोई शक्ति इन्हें पीछे नहीं हटा सकती है ।

श्री जवाहर के अध्यापक अब बुक्स थे । नये अध्यापक ने विज्ञान के रहस्यों से उन का परिचय कराया । जवाहर के लिए एक अलग प्रयोगशाला बनायी गयी । आरंभ से ले कर इन का विज्ञान के प्रति अगाध प्रेम था ।

प्रोफ़ेसर बुक्स एक थियोसफ़िस्ट थे । उन के कमरे में प्रति रविवार थियोसफ़िस्टों की सभा हुआ करती थी । इस सभा में बालक नेहरू नियम से जाया करते थे । धीरे धीरे उस संप्रदाय विशेष पर ये मुग्ध हो गए । इस बीच में इन्हें मिसेज़ बेसेण्ट से परिचय प्राप्त हुआ । और खुद थियोसफ़िकल सोसाइटी के मेम्बर बने । लेकिन कुछ दिनों के बाद बुक्स साहेब इन से अलग हुए तो इन थियासफ़ी भी दूर हो गयी ।

रूस–जापान की लड़ाई छिड़ गयी । आखिर इस लड़ाई में जापानियों की विजय हुई । जवाहर ने जापानसंबंधी अनेक किताबें मंगा कर पढीं । जापान के इतिहास में जैसे वे डूब गए ।

बाल्यकाल से श्री नेहरू का मन राष्ट्रीय भावों से भरा रहता है । उन्हीं दिनों से ये एशिया को यूरोप के अधिकार से छुड़ाना चाहते हैं । अहिंसा या सत्याग्रह की बातें इन्होंने उन दिनों में सुनी तक न थीं । भारत को आज़ाद करने के लिए ये हाथ में तलवार ले कर लड़ना चाहते थे ।

जब श्री जवाहर की उमर पन्द्रह साल की थी, अपने माता पिता के साथ ये भी इंग्लैंड के लिए रवाना हुए ।

इंग्लैंड में पहले तो ये हारो में भरती किए गए। और माता पिता युरोप के विभिन्न देशों में घूम फिर कर कुछ दिनों के बाद स्वदेश लौट आए।

हारो में जवाहर नये थे और सब के सब इन के अपरिचित थे। उन अपरिचितों में ये अकेले थे, फिर भी कुछ दिनों के अन्दर ये अपने को संभाल पाये। जल्दी ही ये दूसरों से हिल मिल गए। पढ़ाई और खेल कूद में ये लगे रहते थे। स्कूल में इन का काम अच्छा रहा, इसलिए पुरस्कार भी पा जाते थे। हारो के स्कूल में ये दो वर्ष तक पढ़ते रहे।

हारो की पढ़ाई पूरी कर के जवाहर केंब्रिडज के ट्रिनिटी कालेज में पहुँचे। ये अब सत्तरह साल के थे। इन को यहाँ इन की इच्छा के अनुसार कुछ लिखने, पढ़ने या खेलने, कूदने की आज़ादी मिल गयी। यहाँ ये तीन साल तक रहे। ये प्रकृतिविज्ञान का कोर्स ले कर अध्ययन करते थे। इस कोर्स में इन के विषय रसायन शास्त्र, भूगर्भशास्त्र, और वनस्पति शास्त्र थे। लेकिन उन विषयों के साथ साथ ये साहित्य और इतिहास में, राजनीति और अर्थशास्त्र में भी अच्छी जानकारी हासिल करते रहे। ट्रिनिटी में भी ये सभा या सम्मेलन में बोलने का अभ्यास नहीं कर पाये।

यत्न करने पर भी ये इस बात में अपनी झिझक दूर नहीं कर सके ।

बीस साल की उमर में जवाहर ने केंब्रिडज में अपनी डिग्री ली । अब ऐ० सी० एस० करने की इच्छा तो हुई और इनर टेम्पुल में भरती हो कर बैरिस्टरी का अध्ययन करने का निश्चय किया गया ।

सन् १९१२ में जवाहर ने बैरिस्टरी पास कर ली । उसी वर्ष ये भारत लौट आए । उन दिनों में श्री तिलक जेल में थे । काँग्रेस के कार्य नहीं के बराबर चल रहे थे । सरकार ने मोडरेटों को अपनी तरफ़ कर लिया था । और काँग्रेस भी एक तरह से इन्हीं मोडरेटों के हाथ में आ गयी थी ।

उस वर्ष काँग्रेस का वार्षिक अधिवेशन बांकीपुर में हो रहा था । पहले पहल जवाहर इसी अधिवेशन में शामिल हुए । गोखले भी उपस्थित थे । उन के व्याख्यानों का अच्छा असर जवाहर पर पड़ा ।

दूसरे वर्ष से जवाहर हाईकोर्ट में वकालत करने लगे । मगर इस पेशे में इन्हें पूरा उत्साह नहीं था । ये तो राष्ट्रीय भावों से भरे थे और चाहते थे कि विदेशी शासन के विरुद्ध

उग्र आन्दोलन चला कर भारत को आज़ाद कर दिया जाए। लेकिन उस समय इस के लिए काँग्रेस तैयार नहीं थी। जवाहर भी उस समय तक काँग्रेस के मेंबर बन गए थे और काँग्रेस की बैठकों और सम्मेलनों में भाग लेने लगे थे। जब कभी विदेशियों के विरुद्ध कोई आन्दोलन उठ खड़ा होता तो ये पूरे तन मन से उस में शामिल होते।

जवाहर को शिकार खेलने में बडी दिलचस्पी होती थी और बार बार इस के लिए ये जंगलों में जाया करते थे। शिकार खेलते हुए एक घटना ऐसी हुई, जो इन के जीवन पर गहरा असर कर गयी। एक दिन ये अपने साथियों के साथ शिकार खेल रहे थे। गोली एक निर्दोष हिरण के शरीर में जा लगी और वह घायल हो कर इन के चरणों में गिर पड़ा। यह मर रहा था। जल भरे नयनों से वह जवाहर की ओर देख रहा था। उस की वह करुणा पूर्ण दृष्टि श्री जवाहर के दिल में बड़ा असर डाल गयी। इस घटना के उपरांत इन्होंने एक तरह शिकार खेलना ही छोड़ दिया।

सन् १९१४ पहला महायुद्ध आरंभ हुआ। वह युद्ध भारत से बहुत दूर हो रहा था। फिर भी उस में अन्यान्य भारतीयों की तरह जवाहर का भी ध्यान लग गया। युरोप

से लड़ाई की नयी नयी खबरें आती थीं। इन खबरों में ये अधिक दिलचस्पी नहीं दिखाते थे। उस लड़ाई के सिलसिले में "भारत रक्षा कानून" बना जिस के कारण भारतीयों को अनेक तरह के कष्ट सहन करने पड़े।

अब राजनैतिक जीवन फिर सजीव हो उठा। तिलक जी जेल से बाहर आए और उन्होंने हमरूल लीग की स्थापना कर ली। एक दूसरी लीग एनिबेसेण्ट की चलायी थी। दोनों लीगों में जवाहर शामिल हुए। मगर काम करते थे। विशेष रूप से बेसेण्ट की लीग के लिए। अब काँग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में भी सजीवता आने लगी। मुस्लीम लीग काँग्रेस के साथ मिल कर काम कर रही थी। एक तरह का नया उत्साह और जोश सब कहीं दिखाई देने लगे। यह सब देख कर जवाहर का दिल फड़कने लगता।

महायुद्ध के आरंभ के दिनों में जवाहर के विचारों या कार्यों में कहने लायक कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ। सभा सम्मेलनों में भाषण देने से ये दूर रहे। लेकिन सन् १९१५ में एक दिन इलाहाबाद में सार्वजनिक भाषण देने पर जवाहर विवश कर दिये गए। नये प्रेस कानून का विरोध करते हुए भाषण देना था। व्याख्यान अंग्रेज़ी में था। व्याख्यान का श्रोताओं पर इतना असर पड़ा कि उस से खुश हो कर

खुद तेज़ बहादुर सप्रू ने खुली सभा में जवाहर को गले से लगा कर चूम लया ।

जवाहर का झुकाव उन दिनों में गरम दल की ओर था । आरंभ में यह बात पिता मोतीलाल जी को चिन्ता में डाल देती थी । लेकिन आगे चल कर उन्होंने भी पुत्र की तरह गरम दल ही को अपना लिया । उन दिनों में गान्धी गरम दल के नेताओं में समझे जाते थे ।

जवाहर ने पहले पहल १९१६ में लखनाऊ काँग्रेस में गान्धी जी के दर्शन किए । उन की बातों ने जवाहर के दिल में गहरा असर किया ।

उसी वर्ष में कुमारी कमला के साथ जवाहर की शादी हुई । गरमी के दिन इन्होंने काश्मीर में बिताए । श्रीनगर में अपने परिवार को छोड़ कर ये पहाडों में घूमने चले गए । दर्शनीय कई स्थानों के दर्शन कर के कुछ हफ़्तों के बाद ये श्रीनगर लौट आए ।

१९१८ में महायुद्ध समाप्त हुआ । भारतीय जनता अनेक कारणों से असंतुष्ट थी । मुसलमानों में भी अंग्रेज़ों के प्रति गुस्सा बढ़ रहा था । तुर्किस्तान और खिलाफ़त की समस्या ज़ोर पकड़ रही थी । रौलक्ट एक्ट प्रसारित किया गया । यह एक्ट अंग्रेज़ों के प्रति भारतीयों के विरोध की अग्नि को भड़काने में ही सहायक हुआ ।

भारतीयों ने इस रौलक्ट एक्ट के विरुद्ध गान्धी जी के नेतृत्व में आवाज़ उठायी। मगर सरकार ने उस की परवाह नहीं की। इस तरह गान्धी जी ने भारत में अपना पहला सार्वजनिक सत्याग्रह आरंभ कर देने का निश्चय किया। हज़ारों की संख्या में लोग सत्याग्रहियों में नाम लिखाने लगे। जवाहर भी लड़ाई में शामिल होना चाहते थे। मगर शुरू में इन के पिता मोतीलाल जी उस नये आन्दोलन के बिलकुल खिलाफ़ थे। वे डरते थे कि इस में भाग ले कर पुत्र कहीं जेल न चला जाए। आखिर इस आन्दोलन के जन्मदाता गान्धी जी इलाहाबाद में मोतीलाल के यहाँ बुला लिए गए। बडी देर तक उन से बातें हुईं। बाद में गान्धी जी ने जवाहर को समझाया कि ऐसा कोई कार्य वह न करें जो पिता जी को असह्य हो।

पंजाब में जालियांवाला बाग में हुए हत्याकाण्ड की जाँच करने के लिए काँग्रेस की ओर से जो कमेटी बनी उस में सी० आर० दास की सहायता करने के लिए जवाहर भी ले जाए गए। इन का सेवा-कार्य देख कर दास जी को अतिशय संतोष हुआ। इस अर्से में इन को गान्धी जी को निकट में रह कर समझने का अवसर खूब मिला। उन के निकट रह कर ही जवाहर को राजनैतिक अंतरदृष्टि प्राप्त हुई।

१९१९ में अमृतसर काँग्रेस में अहिंसात्मक आन्दोलन काँग्रेस के द्वारा स्वीकृत हुआ । जवाहर अब तक इस बात पर विश्वास करने लग गए थे कि असहयोग-आन्दोलन से हम राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं । उस आन्दोलन ने व्यक्ति गत स्वतंत्रता का भी मान कराया । जवाहर का विचार था कि मनुष्य शांत और स्थिर, अचल, गंभीर और निष्काम रहे । अब जवाहर नये आन्दोलन में जी जान से लग गए ।

॥ लडाई के मैदान में ॥

"शूर संग्राम को देख भागे नहीं,
देख भागे सोई शूर नाहीं ।"

वल्लभ भाई पटेल सच्चे शूर थे । संग्राम को देख भागनेवालों में वे नहीं थे । शूर वल्लभ भाई का जन्म गुजरात के अन्तर्गत पेटलाद तालूका के करमसद गाँव में हुआ था । आप के पिता का नाम जवेर भाई थे जिन की आर्थिक स्थिति साधारण थी । जवेर भाई योग्य किसान थे खेती बाडी कर के जीविका चलाते थे । फिर भी वह बडे वीर और साहसी थे ।

जवेर भाई की जवानी के दिनों में सन् १८५७ के गदर का आरंभ हुआ। गदर की खबर पा कर वह अपने हरे भरे खेतों को और शांत कर्षक जीवन को भूल बैठे। घर बार छोड़ कर वह भागे और भाग कर झांसी पहुँचे। वह भी झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की वीर सेना में शामिल हुए। उस विद्रोह में उन्होंने भी अपना हिस्सा अदा किया। जवेर भाई केवल वीर और साहसी ही नहीं थे, मगर निर्भीक और बुद्धिमान भी अच्छे थे। गदर के बाद लौट कर वह अपने गाँव में वापस आए। पिता के समान पुत्र वल्लभ भाई भी साहसी, निर्भीक और बुद्धिमान थे। विपत्ति को देख इन की प्रतिभा चमक उठती थी।

वल्लभ भाई का बचपन माता पिता के साथ गाँव ही में बीता। घर पर इन को थोडी सी शिक्षा प्राप्त हुई। यह भी पिता के साथ सबेरे खेतों में जाया करते थे। किसी से भी उलझ पड़ने का इन का स्वभाव था। घर की शिक्षा के बाद यह नडियाद के स्कूल में पढ़ने गए। वहाँ यह अपने अध्यापक से उलझ पडे। नडियाद से यह बडौदा पहुँचे। यहाँ आ कर इन्होंने एक बडी भारी कठिनाई महसूस की कि संस्कृत भाषा का अध्ययन बड़ा कठिन है। इसलिए संस्कृत को छोड़ कर इन्होंने

गुजराती ली । इस पर अध्यापक बिगड़ पड़े और आखिर तंग आ कर हेडमास्टर से शिकायत की गयी कि "मैं ने ऐसा लड़का नहीं देखा ।" वल्लभ भाई स्कूल से निकाल दिये गये । यह नडियाद लौट आए और वहीं से मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली ।

वल्लभ भाई को कालेज में भेज कर पढ़ाने में इन के माता पिता असमर्थ ठहरे । उन की आर्थिक स्थिति इस के लायक नहीं थी । साहित्यक शिक्षा प्राप्त करने की उत्कण्ठा वल्लभ भाई में भी नहीं थी । फिर भी वह वकील बनना चाहते थे । लेकिन इतना पैसा कहाँ से आते ? फ़िलहाल इन्होंने मुख़्तारी की परीक्षा पास की और मुख़्तारी करनी आरंभ कर दी । कुछ दिनों के बाद यह वकालत का काम करने लगे । कुछ ही दिनों में इन की वकालत खूब चमक उठी । फ़ौज़दारी के मामले ही वह अधिक पसंद करते थे । अपने काम में यह बड़े चतुर थे । जिरह करने में यह सब के आगे थे । इन के तर्क जजों और अधिकारियों को अचरज में डाल देनेवाले थे ।

बाल्यकाल से लेकर वल्लभ भाई में धीरज का गुण पाया जाता था । किसी भी कारण से यह अपने मार्ग

से विचलित न होते थे। एक बार जब यह अदालत में एक मुकदमा लड़ रहे थे, तभी इन्हें एक तार मिला। इन्होंने जिरह के बीच में तार को पढ़ तो लिया, मगर रुके नहीं, जिरह करते गए। मुकदमा पूरा हुआ और यह बाहर चले आए, तभी इन्होंने तार की चर्चा वकील मित्रों से की। उस तार इन की पत्नी की अकाल मृत्यु का समाचार था।

वकालत से वल्लभ भाई ने खूब धन जमा किया। यह अब इंग्लैंड जाकर बैरिस्टरी का अध्ययन करना चाहते थे। इंग्लैंड में इन का नटखट स्वभाव गायब रहा। वहाँ के जीवन में यह बड़े परिश्रमी विद्यार्थी दिखाई दिए। इन के निवास से मिडिल टेम्पुल का पुस्तकालय ग्यारह मील दूर था। लेकिन यह प्रतिदिन सबेरे आठ बजे तक पुस्तकालय में पहुँच जाते और शाम के नौ बजे तक वहीं बैठ कर अध्ययन करते। रोटी दूध सब कुछ वहीं मंगा कर खा लेते। इस अथक परिश्रम के फलस्वरूप बैरिस्टरी की परीक्षा में यह प्रथम श्रेणी में प्रथम पास हुए। इन की योग्यता के कारण इन्हें पचास पाऊण्ड की छात्रवृत्ति मिली। यह बड़े प्रतिभावान युवक थे। इन को न्याय-विभाग में ऊँचा पद दिलाने के लिए भारतीय सरकार तैयार भी थी।

बैरिस्टर वल्लभ भाई भारत में लौट आए और अहमदा बाद में अपनी बैरिस्टरी आरंभ कर दी । इन की बैरिस्टरी चमक उठी । धन भी खूब आने लगा । लेकिन श्रद्धा - भक्ति इन की नष्ट हो चुकी थी । इन का विचार था कि "दुर्गापूजा के दिन सैर सपाटा और आनन्द विनोद करना ही हितकर है । अभागे भारत के निवासियों के लिए यही आवश्यक है कि वे विदेशियों का अनुकरण करें । हम भारतीय नासमझ और नालायक हैं । और हमारे शासक अंग्रेज़ हमारी भलाई चाहनेवाले उद्धारकर्त्ता और उच्च जीवन चलानेवाले हैं ।"

वल्लभ भाई के बडे भाई विट्ठल भाई भी बैरिस्टर थे और उन की बैरिस्टरी बंबाई में खूब चल रही थी । बैरिस्टरी के साथ साथ वे लोक सेवा भी करते थे । आगे चल कर उन्होंने घर संभालने का भार छोटे भाई वल्लभ पर छोड़ दिया और खुद लोक सेवक बने ।

देश भर में गान्धी जी के नये आन्दोलन की धूम मची हुई थी । गान्धी जी पहले तो वल्लभ भाई को आकर्षित नहीं कर सके । उन के नये प्रयोग इन को अव्यावहारिक लगे । इन का विचार था कि नासमझ आततायियों के सामने ब्रह्मचर्य, सत्याग्रह या अहिंसा की बातें करना व्यर्थ है ।

लेकिन इन की यह धारणा अधिक दिनों तक न रही। गान्धी जी अब गुजरात के राजनैतिक जीवन में अधिकाधिक भाग लेने लगे तो वल्लभ जी का ध्यान उन की ओर आकृष्ट होने लगा। गोधरा नामक स्थान में गुजरात प्रान्तीय राजनैतिक सम्मेलन हुआ। गान्धी जी भी उस में उपस्थित थे। रचनात्मक कार्यक्रम की पूर्त्ति के लिए एक कमेट बनायी गयी। वल्लभ भाई उस कमेटी के मंत्री चुने गए। किसी काम का भार ले कर चुपचाप बैठे रहने वालों में यह नहीं थे। इन्होंने बडे उत्साह के साथ अपना कार्य आरंभ कर दिया। सब से पहले बेगार की प्रथा बन्द करने का निश्चय किया गया। लेकिन इस निश्चय की कोई परवाह सरकार ने नहीं की। इस से यह बिगड़ पडे और कमीशनर के नाम नोटीस दी कि सरकार की तरफ़ से सन्तोषजनक जवाब न मिलने पर बेगार के विरुद्ध सारे प्रांत में आन्दोलन चलाया जाएगा। छठे दिन कमीशनर ने वल्लभ भाई को अपने निवास पर बुलाया और इन की माँगें पूरी कर दीं।

बेगार की समस्या तो हल हुई, मगर खेड़ा सत्याग्रह सामने आया। गान्धी जी ने यह सत्याग्रह चलाने का भार वल्लभ पर ही छोड़ दिया। यह गाँव गाँव घूमने

लगे और प्रत्येक किसान को सत्याग्रह का सन्देश पहुँचा देने लगे। किसान जाग उठे और आगे आए; सत्याग्रह सफल हुआ।

जालियांवाला बाग में हुए हत्याकाण्ड के बाद गान्धी जी ने काँग्रेस के सामने अपना नया कार्यक्रम रखा और उस ने उसे स्वीकार किया। उस कार्यक्रम के प्रभाव से प्रभावित हो कर वल्लभ भाई ने अपनी बैरिस्टरी छोड़ दी। संतान को सरकारी स्कूल से हटा दिया और अपने प्रान्त में घूम फिर कर असहयोग आन्दोलन का प्रचार करने लगे। बारडोली में तो सत्याग्रह का पूरा भार वल्लभ भाई पर था। इन की कर्मकुशलता के कारण बारडोली का नाम भारत भर में प्रसिद्ध हो गया।



4766.

4766.

Our Hindi Publications

for

SCHOOL LIBRARIES

आदर्श बालक भाग एक – आर. मोहनदास	0 50
आदर्श बालक भाग दो – पी. जी. वासुदेव	0 50
आदर्श बालक भाग तीन ,,	0 50
बाल कहानियाँ भाग एक – पी. जी. वासुदेव	0 50
बाल कहानियाँ भाग दो ,,	0 50
बाल कहानियाँ भाग तीन ,,	0 50
हमारे राष्ट्र नेता – पी. जी. वासुदेव	0 50
महात्मा गान्धी (जीवचरित्र संग्रह) ,,	0 50
महान पुरुष भाग एक – पी. जी. वासुदेव	0 50
महान पुरुष भाग दो ,,	0 50
महान पुरुष भाग तीन ,,	0 50
महान पुरुष— १ महादेव गोविन्द रानडे	0 50
महान पुरुष— २ बाल गंगाधर तिलक	0 50
महान पुरुष— ३ गोपालकृष्ण गोखले	0 50
वीर वेलुत्तम्पी (जीवचरित्र) पी. जी. वासुदेव	1 00
हिन्दी पण्डित-हिन्दी मलयालम स्वयं शिक्षक-के. पी. नायर	1 00
हिन्दी लिपि पुस्तक स्टान्डार्ड 7.	0 25
हिन्दी लिपि पुस्तक ,, 8.	0 25

VIDYARTHI MITHRAM BOOK DEPOT,
BAKER ROAD, KOTTAYAM.